ब्रह्म ज्ञान योग संस्थान
बिसवाँ सीतापुर

-- भेद-नामदान --

दो प्रकार है नाम के, नाम और सतनाम!
एक तो कर्ता नाम है, एक अकर्ता नाम!!

एक देहीं का ज्ञान है, एक विदेहीं ज्ञान!
एक तत्व का ज्ञान है, एक अतत्व का ज्ञान!!

एक तो जड़ का ज्ञान है, एक चेतन का ज्ञान!
लोकों का एक ज्ञान है, एक अलौकिक ज्ञान!!

पांच नाम है एक में, एक में है केवल सतनाम!
मिथ्या नाम है एक में, सत्य में है केवल सतनाम!!

पांच नाम है सुरत में, तन का एक है नाम!
चौथा पद जो आत्मपद, उसमें है सतनाम!!

सत्यनाम को जानना , जीव का एक ही लक्ष्य!
सन्मुख होना केन्द्र के, सत्य हो जीव प्रत्यक्ष!!

जो आत्मा का नाम है, वही नाम है जीव!
सत्यनाम है आत्मा, उसे ही खोजे जीव!!

सुरत से होता योग है, मन से होता ध्यान!
तन से क्रिया कर्म है, जीव सहज सतनाम!!

नाम से करना पार है, तन ,मन सुरत को जान!
स्वतः यह तीनों पार हो, जानों एक सतनाम!!

नाम, रूप दो द्वैत है, सत्यनाम अद्वैत!
पुरुष, प्रकृति है द्वैत में, आतम है अद्वैत!!

नाम रूप दोनों अकथ, अकथ अरूप अनाम!
सत्य खोजना जीव को, खोजो तुम सतनाम!!

प्रथम है रहनी जीव की, उत्तम, श्रेष्ठ विचार!
नामदान में जानना, भेद सत्य का सार!!

सोच विचार जो तू करे, वह मन है यह जान!
प्रकट प्रकाश जो हो रहा, वही प्रकृति है जान!!

मन और प्रकृति के बीच में, होता आदान- प्रदान!
मन विचार दे प्रकृति को, प्रकृति दे वह सामान!!

देती तो सब प्रकृति है, आज्ञा पुरुष की होय!
केवल सत्य को जान लो, यह सब बस में होय!!

राम कृपा वह धार है, गिरे आत्मघट सोय!
सत्य, धार और आत्मा, यह सब एक ही होय!!

खुद को श्रेय न दो कभी, जितने करो तुम काम!
श्रेय हमेशा ईश को, खुद को कठपुतली जान!!

सत्यनारायण की कथा, होती घर-घर मांहि!
महात्म को तुमने सुन लिया, सत्य को खोजा नांहि!!

नाम सत्य युग चार में, और न कुछ भी सत्य!
नाम है केवल जानना, यही जीव का लक्ष्य!!

नाम और सतनाम में, भेद जानना होय!
सत्यनाम तो एक है, नाम पाँच भी होय!!

नाम जपत काँपहि जम काला!
भूत पिसाच जरै बैताला!!

बैरी बैर करै नहि कोई!
कारज सकल सिद्ध सब होई!!

मिथ्या नहीं, सत्य तुम जानो!
यह महिमा सतगुरु की जानो!!

सतगुरु वही कहावै, मिथ्या और सत्य का भेद बतावै!
मिथ्या छुड़ावै, सत्य लखावै, तब जीव निज घर को जावै!!

मिथ्या में पद तीन है, सत्य में पद है एक!
तन, मन, सुरत यह तीन पद, आतम पद है एक!!

चार पैर है धर्म के, कलि में एक विलुप्त!
तीन पैर से चल रहा, जीव हो कैसे मुक्त!!

इसी विलुप्त को खोजना, यही सत्यपद होय!
चौथा पद है आत्मपद, इसे जानना होय!!

परिवर्तन जिन पदों में, उपयोगी जो होय!
उसे सत्य कहते नहीं, वह मिथ्या पद होय!!

जिसमें परिवर्तन नहीं, पूर्ण अचल पद होय!
वही सत्यपद, आत्मपद, लक्ष्य जीव का सोय!!

मिथ्या पदों के पाँच नाम है, सत्यपद में केवल सतनाम!
सत्यपद अभी प्रकट नहीं है, यही मुख्य सद्गुरु का काम!!

खण्ड - खण्ड में नाम हो, परिवर्तन भी होय!
मिथ्यापद के नाम है, जीव मुक्त न होय!!

सदा अखण्डित सत्यपद, परिवर्तन न होय!
वही सत्यपद, परमपद, वही आत्मपद होय!!

तन रथ है, मन सारथी, इन्द्रियाँ घोड़े जान!
सुरत हमेशा चल रही, यह मिथ्या पद मान!!

छायापद और मैं यही, यही सुरत है जान!
दृष्टा, कर्ता पुरुष है, सत्य नही है जान!!

पूर्ण अकर्ता सत्यपद, सबका मालिक होय!
आधार सभी का वही है, लक्ष्य जीव का सोय!!

चार धाम की यात्रा, छिन पल में ह्वै जाय!
सतगुरु का यह मर्म है, भेद न कोई पाय!!

तन, मन, सुरत यह लोक त्रय, चौथा लोक है आत्म!
छाया इनमें तीन है, सत्य एक है नाम!!

छाया को हो पकड़ना, सत्य को पकड़ो जान!
केवल सत्य को पकड़ना, तीन को छोड़ो जान!!

नाम ही केवल सत्य है, बाकी छाया होय!
भेद नाम का जानना, भेद नाम में होय!!

नाम और सतनाम का, भेद जो जाने कोय!
पुरुष और सतपुरुष है, भेद गुप्त यह होय!!

नाम रहे चौथे पद माहीं, तुम ढूँढो त्रिलोकी माहीं!
कलि केवल एक नाम अधारा, वेद, पुराण, संतमत सारा!!

चौथा पद है आत्मा, यही है चौथा धाम!
चौथा लोक भी यही है, यही तो है सतनाम!!

तीन छोड़ चौथा पद दीन्हा, सत्यनाम सतगुरु गति चीन्हा!

चौथे पद को खोजना, एक ही जीव का लक्ष्य!
जीव हो सन्मुख केन्द्र के, आतम हो प्रत्यक्ष!!

छाया माया एक है, यही हैं तीनों लोक!
तीनों से होना अनन्य, सन्मुख आत्म अलोक!!

तीनों माया पद छोड़ना, यही है माया से वैराग्य!
तन, मन, सुरत जो तीन पद, मिथ्या, माया, राग!!

रावण और राम का, भेद जो जाने कोय!
तन, मन, सुरत को छोड़कर, आतम जाने सोय!!

दस सिर है दस इन्द्रियाँ, मन है रावण जान!
रावण का मन सुरत है, इसको रावण मान!!

सदा हमेशा फूंकते , रावण पुतला जान!
राम की जय हो बोलते, यही भेद है जान!!

आत्मा ही तो राम है, इसी को खोजे जीव!
तन मन सुरत से निकलना, लक्ष्य जीव का पीव!!

चौथा पद ही मुख्य है, यही त्रिलोकी नाथ!
तीनों पद को छोड़कर, जीव हो आतम साथ!!

चौथा पद तब प्रकट हो, तीन शून्य जब होय!!
तुरत आत्मघट प्रकट हो, धार गिरे तब सोय!!

यही धार है आत्मा, गिरे आत्मघट कोय!
प्रकट आत्मा हो नहीं, प्रकट आत्मघट होय!!

तन को होना सहज है, मन को होना शून्य!
स्थिर होना सुरत को, तीन लोक से भिन्न!!

तन थिर, मन थिर, सुरत थिर, थिर हो तीनों लोक!
चौथा पद तब प्रकट हो, जानो आत्म अलोक!!

-- नामदान का सार --

मिथ्या पदों में क्यों पड़ा, पद खोजों तुम सत्य!
सत्य है केवल आत्मा, बाकी सभी असत्य!!

1. तन, मन, सुरत यह मिथ्या पद है, इन्हें छोड़ना है!

2. कैसे छोड़ना है:-
(I) तन को सहज करके!
(II) मन को शून्य करके!
(III) सुरत को स्थिर करके!

3. यह तीनों छाया पद है, माया पद है!

4. इन तीनों को छोड़ने को ही वैराग्य कहा गया है! केवल सत्यपद खोजने में ही इसे छोड़ना है, बाकी समय में जीव को ऐसे रहना है जैसे- पानी में कमल!
माया में रहते हुए भी लिप्त नहीं होना है!

5. सत्यपद खोजने में ही इन तीनों से अनन्य होना है!

6. चौथा पद जो विलुप्त है वही आत्मा है! केवल आत्मा को ही खोजना है!

(I) आत्मा न शरीर के अंदर है न शरीर के बाहर, ऐसे है जैसे पानी में तेल की बूँद होती है!

(II) न यह गुप्त है, न प्रकट है, आत्मघट केवल प्रकट करना है, आत्मा प्रकट नहीं होती है!!

(III) सभी जगह व्याप्त है पर सभी से न्यारा है, किसी को स्पर्श नहीं करता है!

7. आत्मा का ही अंश जीव है, इसीलिए जीव का लक्ष्य आत्मा को ही खोजना है! इसे ही जीव का परमधर्म बताया गया है!!

8. जैसे ही आत्मघट प्रकट होगा, आत्मा की धार आत्मघट पर गिरने लगेगी!

9. इसके लिए शरीर, मन और सुरत का सहयोग नहीं लेना है!

10. सद्गुरु के सहयोग से आत्मा की पहचान करो!

11. यही किलिया, धुरी, केन्द्र भी है!

12. यह अद्वैत है, एक है, इसी के नाम अनेक है!

13. जीव को केवल सन्मुख होना पड़ता है, शेष सभी कुछ स्वतः ही हो जाता हैं!

14. जीव आत्मा द्वारा संचालित हो जाता है!

15. सद्गुरु खोजो और चौथा पद जो विलुप्त है, उसे खोजकर जीव की यात्रा पूरी करो!

सुरेशादयाल
ब्रम्हज्ञान योग संस्थान
मोचकला बिसवाँ सीतापुर
उ० प्र०
सम्पर्क सूत्र- 9984257903